सच्ची सीख

हरी दास
भूजलविज्ञान प्रभाग, राजसं.

साधू महात्मा दूसरों का भला करने, दूसरे का दुःख बाँटने और सच्ची सीख देने को ही जीवन का उद्देश्य मानते हैं। एक बार एक साधु महात्मा ने मनुष्य से पूछा तुम्हें क्या चाहिए ? मनुष्य ने कहा महात्मा जी मैं उन्नति करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे पास धन-दौलत और सुख-शान्ति हो और लोग मेरी प्रशंसा करें। उस साधु ने दो थैले मनुष्य को दिये और बोला इन थैलों को ले लो इनमें से एक थैले में तुम्हारे पड़ोसियों की बुराईयाँ भरी हैं। इसे पीठ पर लाद लो, इसे सदा बन्द रखना न तुम देखना और न ही किसी दूसरे को दिखाना और दूसरे थैले में तुम्हारी बुराईयाँ भरी हुई हैं। इस थैले को हमेशा अपने सामने रखना और देखते रहना।

मनुष्य ने दोनों थैले उठा लिये लेकिन उसने एक भंयकर भूल कर दी जिससे सच्ची सीख का उसे कोई फायदा नहीं हुआ उल्टा नुकसान हुआ। उसने अपनी बुराइयों का थैला पीठ पर लाद लिया और उसका मुँह कस कर बंद कर दिया और अपने पड़ोसियों की बुराई वाला थैला अपने आगे लटका लिया वह उसे खोल कर देखता और अन्य लोगों को भी दिखाता। जो वरदान उसने माँगे थे वह सब उल्टे हो गये। वह अवनति करने लगा। उसे दुःख और अशान्ति मिलने लगी और वह निर्धन हो गया। यदि हम दूसरों के दोष न देखे, अपने दोष देखें तो सुधार होगा शान्ति तथा उन्नति मिलेगी, प्रशंसा मिलेगी अन्यथा अशान्ति, दुःख और अवनति यही सच्ची सीख है।

****

हँसिएं मत

सिपाही - पार्क में गधों को लाने की इजाजत नहीं है, क्या यह गधा आपका है ?
महेश - नहीं।
सिपाही - पर यह आपके पीछे-पीछे आ रहा है।
महेश - यूँ तो आप भी मेरे पीछे आ रहे हो।

***

एक बूढ़ी औरत को श्रृगांर का बड़ा शौक था। एक दिन वह श्रृंगार करके बाजार गई वहीं एक लड़का गाने लगा... देखो आँख मेरी लड़ी है।
बुढ़िया : आँख जिससे लड़ी है वह तेरी माँ से भी बड़ी है।

***

दो लड़कियाँ बातें कर रही थी
पहली लड़की - देखो तो सही कितना बन-ठन कर जा रहा है।
दूसरी लड़की - "चिन्ता मत करो दो सप्ताह बाद सारी मस्ती निकल जाएगी"
पहली लड़की - वह कैसे?
दूसरी लड़की - क्योंकि दो सप्ताह बाद उससे मेरी शादी होने वाली है।

***